करने की सामर्थ्य होते भी वह कुछ चेष्टा नहीं करता। इसका नाम मोह है। चेतना से युक्त होते हुए भी वह जीवन में अकर्मण्य रहता है। ये सब तमोगुणी मनुष्य के लक्षण हैं।

यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत्।
तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिपद्यते।।१४।।

यदा=जब; **सत्त्वे**=सत्त्वगुण की; **प्रवृद्धे**=वृद्धि में; **तु**=तो; **प्रलयम्**=मृत्यु को; **याति**=प्राप्त होता है; **देहभृत्**=देहबद्ध जीव; **तदा**=तब; **उत्तमविदाम्**=महर्षियों के; **लोकान्**=लोकों को; **अमलान्**=शुद्ध; **प्रतिपद्यते**=प्राप्त करता है।

अनुवाद

सत्त्वगुण की वृद्धि के काल में मरने वाला पुण्यात्माओं के निर्मल उच्च लोकों को प्राप्त होता है।।१४।।

तात्पर्य

सत्त्वगुणी पुरुष ब्रह्म, जन, आदि उच्च लोकों में पहुँच कर वहाँ दिव्य भोगों को भोगता है। **अमलान्** शब्द महत्त्वपूर्ण है। इसका अर्थ है कि वे लोक रजोगुण और तमोगुण से मुक्त हैं। प्राकृत-जगत् में अनेक अशुद्धियाँ हैं; सत्त्वगुण ही यहाँ का सबसे शुद्ध अस्तित्व है। नाना प्रकार के जीवों के लिए भिन्न-भिन्न लोक हैं। इनमें से जो सत्त्वगुण में मरते हैं, उन्हें महर्षियों और भक्तों के उच्च लोकों की प्राप्ति होती है।

रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसंगिषु जायते।
तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते।।१५।।

रजसि=रजोगुण में; **प्रलयम्**=मृत्यु को; **गत्वा**=प्राप्त हुआ; **कर्मसंगिषु**=कर्मों में आसक्त मनुष्यों में; **जायते**=जन्म लेता है; **तथा**=और; **प्रलीनः**=मरा हुआ; **तमसि**=तमोगुण की प्रधानता में; **मूढयोनिषु**=पशु आदि योनियों में; **जायते**=उत्पन्न होता है।

अनुवाद

रजोगुण के बढ़ने पर मृत्यु को प्राप्त हुआ प्राणी कर्मों में आसक्ति वाले मनुष्यों में जन्म लेता है और तमोगुण में मरा हुआ पशु आदि मूढ़ योनियों में उत्पन्न होता है।।१५।।

तात्पर्य

कुछ की धारणा है कि एक बार मनुष्ययोनि को प्राप्त होने के बाद जीवात्मा का फिर कभी अधःपतन नहीं होता। यह सत्य नहीं है। इस श्लोक से स्पष्ट है कि अन्तकाल में यदि किसी में तमोगुण की प्रधानता हो जाय, तो उसे अधम पशुयोनि की प्राप्ति होती है। ऐसे में मनुष्य देह की फिर प्राप्ति के लिए उस स्थिति से क्रमशः अपना उत्थान करना होगा। अतएव जो मनुष्ययोनि के माहात्म्य को यथार्थ रूप से